ID1-4-HI

क्या नए वैज्ञानिक सबूत जीवन की उत्पत्ति के बारे में डारविन के उत्पत्ति के सिद्धान्त का अंत करते हैं? प्रोग्राम –4

अनाऊंसर: आज जीवन के बारे में सबसे महत्वपूर्ण सवाल है, हम कहाँ से आए हैं? हम यहाँ कैसे पहुंचे? इस कारण हम अस्तित्व में आए? चार्लस डारविन ने अपनी ओरिजन ऑफ़ स्पीशीज में, माना है कि वो नही जानते कि पहला सेल किस तरह अस्तित्व में आया, अनुमान लगाया कि किसी तरह से कुछ साधारण सेल एक साथ आए, और पहला प्रिमेतिव सेल बना, शुरू की पृथ्वी के पानी से बना/

लेकिन आज डारविन के उत्पती के सिद्धान्त को चुनौती मिलती है, मॉलिक्यूल बायोलॉजिस्ट द्वारा, जैसे वैज्ञानिकों ने खोज निकाला कि मनुष्य के सेल सरल नही हैं, लेकिन विश्वास के परे बेचिदा हैं/

एल छोटी सी सेल माईक्रो मीनी राईज़ फैट्री है, जिसमे हजारों खासकर बनाए गए पीसेस हैं, जो खास मोलीक्यूलर मशीनरी के हैं, जोएक लाख मिलियन एटम से बने हैं/

हर सेल के न्यूक्लियस में डी एन ए मॉलिक्यूल है, जो कि तीन बिलियन खास जानकारी से भरा है, जो डिजिटल कोड में हैं, ये कोड सेल को बताता है कि कैसे काम्प्लेक्स सेल मॉलिक्यूल बनाए,जिसे प्रोटीन कहते हैं, कि सेल के काम जीवित रह सके/

डी एन ए की से सटीक जानकारी कहाँ से आती हैं? क्या ये बिना निर्देश के स्वाभाविक शक्ति के कारण है? या ये बुद्धिमान निर्माता के कारण बना है?

माइक्रोसॉफ्ट के बिल गेट्स ने कहा है, मनुष्य का डी एन ए एक कंप्यूटर प्रोग्राम जैसे है, हमने जो भी बनाया है उससे बहुत बहुत आधुनिक है/

आज आप सीखेंगे कि क्यों मनुष्य के सेल से बनाया गया डी एन ए का डिजिटल कोड, ये बुद्धिमान निर्माता का साबित करनेवाला सबूत है/

मेरे मेहमान हैं डॉ. स्टीवन मायर, जो संसार के बुद्धिमान निर्माता के सह-संस्थापक हैं, इन्होनेविज्ञान में पी एच डी पाए हैं, कैबरिज यूनिवर्सिटी से, हम आपको जुड़ने का न्योता देते हैं/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है आज महान प्रोग्राम है,मेरे मेहमान हैं डॉ. स्टीवन मायर, फिलोसोफर ऑफ़ साइंस, इन्होने पी एच डी की है, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी इंग्लैंड से, बेस्ट सेलिंग बुक लिखी है, सिग्नेचर इन द सेल, डी एन ए एण्ड द एविडेंस फॉर इंटेलीजेंट डिजाईन, शायद आप कह रहे होगे कि जॉन आप क्यों ये प्रोग्राम कर रहे हैं, बुद्धिमत्ता की डिजाईन पर, मतलब, ये विश्वास करना आसान है, सबसे बुद्धिमान परमेश्वर ने संसार

को बनाया, हमारासंसार, पेड़, जानवर, और मनुष्य बनाए, मतलब सब ये विश्वास करते हैं, हैंना?दुर्भाग्यवश ऐसा नही है, और ये स्कुल और यूनिवर्सिटी में सिखाया नही जाता है,और मैं चाहता हूँ कि आप उदाहरण सुनिए, नए नास्तिक से, जो कि ऐसे दृष्टिकोण रखते हैं, जिसे स्कुल और यूनिवर्सिटी स्वीकार करते हैं, संसारका भौतिकवादी नैचरल दृष्टिकोण है,कि जीवन और संसार डिजाईन जैसे दीखता है, लेकिन ऐसा नही है, ठीक है, और यहाँ रिचर्ड डॉकीन्स इसके बारे में बता रहे हैं, कि गर्डन है लेकिन गार्डनर नही है/ये डिजाईन दिखती है लेकिन डिजाईन नही है/ मैं चाहता हूँ कि आप देखिए/

अन लॉर्किंग मिस्ट्री ऑफ लाईफ से

करटसी ऑफ इलैस्ट्रा मीडीया

रिचर्ड डॉकिन्स: जब हम गार्डन में जाते हैं और देखते हैं कि ये कितना सुंदर है और कितने रंगीन फूल हैं, तितली और मधुमक्खी को देखते हैं, अवश्य ही ये स्वाभाविक है कि सोचे कि एक माली होगा, कोई भी मुर्ख ये सोचता है कि कोई माली होगा, डारविनकी महान उपलब्धी, ये दिखाती है कि ये सच होना जरूरी नही है, ये तो सही दिखता है कि यदि गार्डन है तो माली भी होगा, जिसने इसे बनाया और ये सब इसके साथ चलता है, डारविन ने यही किया कि चकित करनेवालेविरोधी सच्चाई को दिखाया, कि इसे इसी तरह से बिना दिशा की क्रिया से नही दिखाया जा सकता/ खैर ये अवसर से नही हुआ, अवसर ये हुआ ये कहना पूरी तरह से गलत है, ये अवसर से नही है, नैचरल सिलेक्शन अवसर से नही है,ये उसका सार है, डारविन ने यही खोजा था, उन्होंने केवल गार्डन ही नही दिखाया लेकिन जीवित संसार की हरएक चीज़, और ये सिद्धान्त केवल इसी पृथ्वी के नही पर किसी भी ग्रह पर के है, जहाँ भी हम सही क्रम में बेचिदा बात देखते हैं जिसे हम जीवन कहते हैं,इसका विवरण है जिसे हम सरलशुरुवात से देखते हैं, समझनेवाले व्यवहारिक स्रोतों के द्वारा/ ये शायद सबसे महान उपलब्धी है जिसे किसी मनुष्य ने कभी हासिल किया होगा/ उन्होंने केवल ये नही दिखाया कि ये किया जा सकता है, मैं विश्वास करता हूँ कि कोई भी पर्यायी बात ऐसी है जो इतनी उदार हो कि सामान्य समझ के नियम भी न समझ पाए/ और ये इतनी अजीब हो सकती है कि इसे मानने के लिए हम भी तैयार नहीहैं, हालंकि हम साबित नही कर सकते हैं कि कोई परमेश्वर है,लेकिन फिर भी हम सच में उसे साबित नही कर सकते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, आपने इसे सूना, इसके पहले कि स्टीवन इस पर कुछ कहे, मैं चाहता हूँ कि आप विरोधी दृष्टिकोण भी देखे, मैं चाहता हूँ कि आप सेल के बेचिदा होने के बारे में कुछ सबूतों को देखे, आप इससे खुद न्याय करेंगे, विज्ञान ने पाया कि सेल बहुत बेचिदा हैं और बहुत ही सटीक कोड के अनुसार काम करते हैं, जिससे ये अपना काम करते हैं और सवाल ये है, सबसे पहले इन कोड में ये जानकारी कहाँ से आती है? मैं चाहता हूँ कि आप देखिए कि ये कितना उलझा हुआ है, इसे देखिए/

अन लॉकिंग मिस्ट्री ऑफ लाईफ से

करटसी ऑफ इलैस्ट्रा मीडीया

अनाऊंसर: कंप्यूटर एनीमेशन के द्वारा हम सेल में जाकर काम के इस अद्भुत तरीके को देख सकते हैं/

सेल के भीतर जाने के बाद हम डी एन ए के कसे हुए स्ट्रैंड को देख सकते हैं, जिन में ओर्गानिजम में प्रोटीन बनाने की जरूरी जानकारी होती है/

ट्रान्सस्क्रिपशन की क्रिया में, मॉलिक्यूलर मशीन पहले डी एन ए हिलिक्स को खोलती है, किखास प्रोटीन मॉलिक्यूल बनाने के लिए जरूरी जेनेरिक जानकरी दे सके/

दूसरी मशीन इस जानकारी को कॉपी करती है कि मैसेन्जर आर एन ए मॉलिक्यूल बनाए/

जब ट्रान्सस्क्रिपशन पूरा हो जाता है, तो सलेंडर आर एन ए जेनेटिक जानकारी कोन्यूक्लिअर पर काम्प्लेक्स से ले जाता है, जो सेल न्यूक्लिअस की अंदर बाहर जानेवाली ट्राफिक का गेट कीपर हैं/

मेसेन्जर आर एन ए स्ट्रानडदो भागों की मॉलिक्यूलर फैक्ट्री की ओर जाता है, जिसे रायबोजोम कहते हैं, वहांसुरक्षित रूप में जुड़ने के बाद, ट्रांसलेशन की क्रिया शुरू होती है/

रायबोजोम के भीतर, मॉलिक्यूलर असेम्बली लाइन खास क्रमबद्ध अमीनो एसिड की चेन बनाती है, ये अमीनो एसिड सेले के दूसरे भागों से लाए जाते हैं, और फिर सैकड़ो यूनिट लंबी चेन बनाते हैं, उनकेक्रम की अरेन्जमेन्टनिश्चित करती है कि वो कौनसे प्रोटीन्स बनाएंगे/

जब ये चेन पूरी हो जाती है, तो ये रायबोजोम से बेरेल आकार की मशीन में लाइ जाती है, जो इसके काम के लिए निश्चित आकार के लिए मोड़ देती है/

चेन प्रोटीन में मोड़ने के बाद, उसे खोला जाता है और दूसरी मॉलिक्यूलर मशीनइसे जहाँ जरूरत हैं उस ले जाती है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: दोस्तों आप देख रहे हैं कि एक सेल में क्या होता है/और आपके शरीरी में करोड़ों सेल हैं, और ये सब अब हो रहा है/बात तो ये है कि क्या आपको लगता है कि ये डिजाईन जैसे दिखता है या ये डिजाईन है?क्या ये आपको बुद्धिमत्ता दिखाता है? अब स्टीवन मैं चाहता हूँ कि आप इन दोनों पर बताए, सबसे पहले रिचर्ड डॉकीन्स पर और फिर आपने जो सेल में देखा है,औरफिर मैं चाहता हूँ कि आप मुख्य बात बताए, मुख्यबात जो बुद्धिमत्ता की डिजाईन की है, और फिर हम सवालों पर देखेंगे, जो इसके विरुध्द में उठते हैं, मैं चाहता हूँ कि आप जवाब दे, आप बताइए/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, हम यहाँ डॉकीन्स से 19 वी सदी के निश्चित दृष्टिकोण को देख सकते हैं, कि एक अनिश्चित क्रिया है जिसे नैचरल प्रोसेस कहते हैं,वो डिजाईन करने की बुद्धिमत्ता को बनाते हैं, और इस तरह से उन्होंने इस संसार की हर बात को बताया है/अब आज की आधुनिक बायोलॉजी में इस पर बहुत बहस होती है, 19 वी सदी में डारविन यही बता पाए,कि सबसे उत्तम छोटे स्केल के वेरिएशन, हमारे पास उदाहरण है कि नैचरल सिलेक्शन एक किया है जो ये दिखाती है, जो असली परिणाम लाती है जैसे फेंच बीक, जो छोटे या बड़े होते हैं, या अलग वातावरण में अलग आकार के होते है, और इस क्रिया में उस वातावरण को अच्छे से स्वीकार करने के लिए बहुत से फिंच होते हैं/लेकिन ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें नैचरल सिलेक्शन और रैंडम म्युटेशन बता नही पाते हैं, और बिओलोजिक्ल क्रांति में बहुत से संदेह है कि क्या ये क्रिया जीवन के बड़े बदलाव के बारे

में बता सकते हैं, सामान्य रूप में नए तरह के जीवन प्रकट हो रहे हैं, जीवन के इतिहास में, जैसे सबसे पहले पक्षी को देखिए/

लेकीन चाहे आप मान ले कि डारविन का विवरण बता सकता है,इस बड़े रूप के क्रांति के बदलाव को, तो फिर बुनियाद समस्याएँ हैं, जिसे खुद डॉकीन्स ने माना है, और वो तो पहले जीवन की शुरुवात है/डारविन ने कभी ये बताने की कोशिश नही की/और डॉकीन्स ने ये लोगों के सामने माना है कि पहले जीवन की शुरुवात के बारे में बताने के लिए कोई भी बिना निर्देश का क्रान्तिकारी तरीका नही है, याने हर जीवित चीज़ को हम नही बता सकते हैं, बिना निर्देश के मैकनिजम से या नैचरल सिलेक्शन से/और खासकर हम जानते हैं कि ये जानकारी की शुरुवात को नही बता पाया है/और ये जीवन की शुरुवात की जड की समस्या है/और ये असली समस्या है जिसके बारे में डॉकीन्स ने नही बताया है/

मैं यही बात कह रहा हूँ कि डी एन ए मॉलिक्यूलमें जो जानकारी है वो सीधा बुद्धिमत्ता के बारे में बताती है, अनिश्चित क्रिया के बारे में नही, अब चलिए मैं बताता हूँ कि डॉकीन्स ने किस तरह ये डिजाईन होने के बारे में बताया है/कल्पना कीजिए कि बहुत से गार्डन हैं, शायद कुछ ऐसे ही बढ़े हो स्वाभाविक रूप में बीज छिड़ने के कारण, या ऐसे गार्डन के बारे में क्या जो जानकारी से भरा है?/

सच में कुछ साल पहले मैंने ये अनुभव किया है जब मैंविक्टोरिया हारबर से जा रहा था/याने थोडा उपरी भाग लाल और पीले फूलों का था, मेरा ध्यान वहां गया, तो मैंने अपना चश्मा निकाला, और ध्यान से देखा, तो तुरन्त जाना किमाली वहां काम कर रहा था, यहाँ बुद्धिमत्ता काम कर रही थी क्योंकि ये ऐसे ही पीले रंग के फूल नही आए थे/ये गार्डन जानकारी से भरा था, और फूलों में सन्देश था वेलकम टू विक्टोरिया/

अब डॉकीन्स सामान्य समझ की बात करते हैं, खैर वो कारण बनाने के सिद्धान्त के बारे में कह रहे हैं,जो डारविन ने उपयोग किया था, जब हम भूतकाल की किसी घटना के बारे में बताने की कोशिश करते हैं, तो हमें कारण जानन चाहिए जिसके कारण ये परिणाम आया है/नैचरल सिलेक्शन और रैंडम न्यूटेशन या कोई भी, बिना निर्देश क अ मैकनिज्म, इन में पहले जीवन की शुरुवात के लिए जानकारी की बात नही है/और हम जानते हिं कि वो जीवनजानकारी से भरा है/जैसे विक्टोरिया को वो गार्डनया कुछ और हमने देखा कि कैसे जानकारी प्रोटीन के निदेश को देखती है,मैंने पहले बताए एनीमेशन से/ याने हम ऐसे ही रैंडम या बिना क्रम के गार्डन को नही देख रहे हैं, हम इसे देख रहे हैं जो जानकारी से भरा है/हम अनुभव से यही जानते हैं कि जानकारी हमेश बुद्धिमत्ता के स्रोत से आती है/

जानकारी के वैज्ञानिक ने इस तरह से इसे देखा है, कि जानकारी आदतन निरन्तर क्रिया से जुडी होती है/और ये सही तरह से देखना है, जो हमारे अनुभवों पर आधारित है/ ये सारे साइंटिफिक कारण की बुनियाद है, लेकिनजब हम डी एन ए के बारे में चर्चा करते हैं तो ये बहुत ही अद्भुत जानकारी है/बिल गेस्ट्स ने कहा कि डी एन ए सॉफ्टवेयर प्रोग्राम जैसे है/लेकिन हमने अब तक बनाए सबसे बहुत बेचिदा है, याने ये बहुतसी जानकारी है,अब ये सुझाव है क्योंकि हम अनुभव से जानते हैं, कि प्रोग्राम बनाने के लिए प्रोग्रामर की जरूरत है, हम सामान्य रूप में जानते हैं कि ये जानकारी बुद्धिमत्ता के स्रोत से आती है, जो हम कह रहे हैं, फूलों के अरेन्जमेन्ट में,या न्यूज़ पेपर की हेड लाइन हो,या किताब का पैरेग्राफ हो, या हायरोग्लाफिक शब्द रखना,जैसे उदाहरण के लिए रोसेट्टा स्टोन पर हो/या रेडियो सिगनल में रखी गई जानकारी,जहाँ भी हम जानकारी देखे और उसके स्रोत के बारे में देखे, तो हमेशा बुद्धिमत्ता में आता है, अनिश्चित क्रिया में ही/

अब न डॉकीन्स और न कोई भी जो इवोल्यूशनरी बायोलॉजी पर काम करनेवाला जानकारी के बारे में विवरण नही दे पाया है/हाँ अवश्यही, छोटीबातें हैं जो नैचरल सिलेक्शन से उत्पन्न होती हैं,जीवन की बुनियादी बदलाव के लिए जानकारी की जरूरत है,और खासकर जीवन की शुरुवात में, डी एन ए के कोड जैसी जानकारी चाहिए,जो किसी अनिश्चित क्रिया द्वारा नही बताया गया, ये बुद्धिमत्ता की सामर्थ के बारे में बताता है, सच में

हम केवल एक ही कारण जानते हैं, इस पुरे संसार में, जो जानकारी उत्पन्न करे वो बुद्धिमत्ता है, जानकारी की खोज जीवन की बुनियाद है, ये असली डिजाईन के सबूत हैं, बुद्धिमता की डिजाईन है अनिश्चित क्रिया नही है,ऐसी डिजाईन नही है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: स्टीवन अब हम बुद्धिमत्ता की डिजाईन पर उठे सवालों पर चर्चा करेंगे, हमेशाजो सबसे पहले आता है,किबुद्धिमत्ता की डिजाईन विज्ञानके लायक नही है, इस पर बताइए/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी ये एक तरह सेथेयरी के साथ इस बहस को जोड़ने की कोशिश है,लोग कहना चाहते हैं, ये विज्ञान है,आस्था है, फिलोसोफी है,इतिहास है? खैर इस के लिए मेरा सबसे पहला जवाब यही है, इससे फर्क नही पड़ता कि ये क्या है, कि इस थेयरी या विचार को कैसे विभाजित करते हैं,हम ये विचार जानना चाहते हैं कि ये सच है या नही/और मैंने केस बनाई कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन के लिए मजबूत सबूत हैं,चाहे जैसे भी विभाजित करें, और दूसरी बात है, मैं कहूँगा कि विभाजित करने के लिए हर अच्छा कारण है,ये साइंटिफिक थेयरी है,खासकर, ऐतिहासिक साइंटिफिक थेयरी है,जो भूतकाल में हुआ कि जीवन किस कारण आया है,और मैं इस कारण ये कहता हूँ कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन की मेरी केस बनाने के लिए,मैंने एक स्थिर ऐतिहासिक साइंटिफिक तरीका उपयोग किया, सच ये साइंटिफिक का वही तरीकाहै जो डारविन ने उपयोग किया था, ओरिजिन ऑफ़ स्पीशीज में, इस तरीके का नाम है, इस तरीके का नाम है,the method of multiple competing hypotheses" या the method of inferring to the best explanation"डारविन ने इसका उपयोग किया था/

ये तरीका इस तरह काम करता है,यानेआप यदि भूतकाल की कुछ बताना चाहते हैं,तो आप स्पर्धा के कुछ कारण देते हैं, हमारे अनुभवों के साथ हरएक का मुल्यांकन करते हैं,देखतेहैं कि सबसे अच्छा इस सबूत के साथ मिलता है, और फिर ये कारण बताते हैं जो उन सबूतों को अच्छे से बताते हैं,मैंने बुद्धिमत्ता की डिजाईन की केस बनाने के लिए इसी तरीके का उपयोग किया/जो डी एन ए में उपस्थित जानकारी पर आधारित है, जैसे मैं हर तरह के दूसरे संभव कारणों के विवरण को देखा, तो पाया कि केवल एक ही कारण है, जो सवाल के परिणाम को उत्पन्न करने के लिए जाना जाता है, खासकर डिजिटल कोड और जानकारी, उसे बुद्धिमत्ता कहते हैं/

तो, मैंने साइंटिफिक कारण का डारविन का तरीका उपयोग किया, कि नॉन-डारविन निश्कर्ष पर आऊ, इससे यही साबित होता है, कि यदि कारण का मेरा तरीका, यदिबुद्धिमत्ता की डिजाईन की मेरी केस इसे साइंटिफिक नही बनाती है, तो फिर ओरिजिन ऑफ़ स्पीशीज की डारविन की केस भी साइंटिफिक नही है, मुझे नही लगता कि कोई भी ये कहना चाहेगा,शायद कहने का एक और तरीका होगा कि ये परिभाषा के सवाल मायने नही रखते, लेकिन वो इस हद तक इसे करते हैं, बुद्धिमत्ता कीडिजाईन के पास साइंटिफिक होने के हर सबूत हैं,इसके क्रान्तिकारी विरोधियों के जैसे ही/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है स्टीवन बहुत से लोग कहते हैं कि दूसरी विवाद तो ये है,कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन तो अनजान होने कारण बहस करना है,हम नही जानते हैं कि जीवन की शुरुवात के लिए, नैचरल कारण क्या है,लेकिन किसी दिन जानेंगे, तो इस बिच, जैसे आप बुद्धिमत्ता की अजीबसी थेयरी लेकर आते हैं,ऐसे समय जब हम नही जानते, तो क्या कहेंगे?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, आपने सही विवाद उठाया है, मेरे एक डिबेटिंग पार्टनर हैं, माइकल शरमर, जो ये विवाद हमेशा उठाते हैं, मैं एक कोड बताता हूँ, शरमर का कोट जहाँ वो कहते हैं, इससे मिलता हुआ कहते हैं, कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन ये बताती है कि जीवन बहुत ज्यादा उलझा हुआ है,ये तरह से जानकारी के बारे में कहना है,कि नैचरल शक्ति के द्वारा जुड़े हैं, इसलिए जीवन भी बुद्धिमत्ता की डिजाईनर से ही बनी होगी/

और चलिए उनके विवाद को लॉजिकली देखते हैं, कि क्या कह रहे हैं, वो दावा कर रहे हैं,कि हम जो कह रहे हैं, वो केवल इस लिए कि हम कारण नही जानते हैं, इसलिए ये बुद्धिमत्ता की डिजाईन होगी, हम नैचरिलिस्टिक क्रिया नही जानते है,जिसे मैंने इस स्लाइड में एन पी से दिखाया है,ये सवाल का परिणाम लाता है, जिसे ई से दिखाया गया है,तो हमारे पास नैचरल क्रिया नही जो सवाल का परिणाम उत्पन्न करे, इसलिए इस भेद को बुद्धिमत्ता की डिजाईन कहना चाहिए,हम इस तरह से सिग्नेचर इन द सेल में बहस नही करते हैं/

मेरा विवाद यही है कि हम नैचरल क्रिया को नही जानते हैं, जोसवाल का प्रभाव निर्माण करें, ये सच है, ये विवाद का भाग है, लेकिन हम कारण को जानते हैं, जो योग्य है कि सवाल के प्रभाव को उत्पन्न करें, सवालका जवाब है कि जानकारी प्राप्त करे, उलझी हुई जानकारी,सटीक काम करनेवाली जानकारी, हम इसे उत्पन्न करनेवाले कारणों को जानते हैं,बुद्धिमत्ता,इसलिए हम जो जानते हैं, उसके आधार पर, हम जो नही जानते वो नही,लेकिन हम जो सवाल और परिणाम के बारे में जानते हैं,बुद्धिमत्ता तो डी एन ए में हम जो जानकारी देखते हैं उसकी शुरुवात के लिए सबसे अच्छा विवरण है/ये अनजान होने की बहस नही है, ये हमारे संसार के वर्तमान के कारण और प्रभावके ढांचेपर आधारित है/

तो वो हमारे बहस को गलत तरह से बता कर कह रहे हैं कि ये तो अनजान होने कारण बहस है,दूसरे लोग कहते हैं कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन तो दरारों में परमेश्वर को रखने का विवाद है,सच में हम वही दावा करते, दरारों में परमेश्वर को रखना याने कहना है,कि अनजान होकर बहस करते हैं, हम ऐसी बहस नही करते हैं,हम जो जानते हैं उसके आधार पर विवाद करते हैं, कल्पना कीजिए, किहम चर्चा कर रहे हैं, और आप अर्कीयोलोजिस्ट हैं,और आपने रोसेट्टा स्टोन खोजा है,और आप इन सरे विवरण का मुल्यांकन करना शुरू करते हैं, और आप जानते हैं कि ये तो शास्त्रियों ने बनाया है,येजानकारी है,येतो ऐसे ही हवा और पानी से बना हुआ नही है,कोई नही कहेगा कि आपने शास्त्रियोंकेजैसे दरारों को रखकर कुछ बनाया है,नही, हम बुद्धिमत्ता से बना रहे हैं उस आधार पर जो हम जानते हैं, कि ये केवल बुद्धिमत्ता ला सकती है/वो तो केवल जानकारी है/और हम इन बातों को अनुभव के किसी भी क्षेत्र में उपयोग करते हैं, और बायोलॉजी में इसे तरह से कोई दावा करना तो बहुत ही अजीब होगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, स्टीवन,माइकल शरमर से एक और विवाद है,"Why Darwin Matters"में,और वो इस तरह से कहते हैं, कि जंक डी एन ए सामान्य रूप में बुद्धिमत्ता की डिजाईन से सहमत नही है/कहते हैं कि बुद्धिमत्ता से बनाए जाने के बजाए मनुष्य के जीनोम तोमोज़ेक म्यूटेशन हैं/फ्रेगमेंट कॉपी और उदहर लिए सिक्वेन्स हैं, और डी एन ए का संबन्ध नही है, औरये तो करोड़ों साल के इवोल्यूशन केबाद में हुआ है/ आप क्या कहेंगे?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, हम सामन्य रूप में यही बहस सुनते हैं, यदि जानकारी है, जीनोम बुध्दिमत्ता से बना है तो जंक डी एन ए क्यों हैं? जो डी एन ए प्रोटीन नही बनाता है तो वो किसी काम का नही है? और सच में, ये अजीब विवाद है, क्योंकि अब हम जानते हैं,कि जंक डी एन ए जंक नही है, सच में हम जीनोम से अब ये जान सकते हैं, कि अब वो पूरी तरह से कंप्यूटर के ऑपरेटिंग सिस्टम जैसे काम करते हैं,जो निश्चित करते हैं समय, और क्रम और छाप को, और दूसरी जानकारी उत्पन्न करते हैं,डेटा फैल से जो प्रोटीन के लिए कोड करते हैं/

और मैंने अपने साथ डी एन ए के काम की छोटी लिस्ट लाइ है, इसकी खोज की गई और मैंने सोचा कि ये दर्शकों के लिए दिलचस्प होगा कि इसे पढ़े, जंक डी एन ए, जोजंक नही है, ये काम करता है,ये काम करता है, औरइसके कुछ काम ये हैं, डी एन ए रेपलिकेशन को रेग्युलेट करता है, ये ट्रांसक्रिप्शन की क्रिया को रेग्युलेट करता है, ये जेनेटिक मटेरियल की प्रोग्राम्ड री-अरेन्जमेन्टकरता है/ ये क्रोमोसोम को सही तरह मोड़ने में

औरमेन्टेन करने में प्रभावडालता है, और ये न्यूक्लिअर मेम्ब्रेन के क्रोमोसोम के इन्टरएक्शन पर नियन्त्रण करता है, और न्यूक्लिअर मेट्रिक्स पर, ये 5 हैं, मैं और 5 बताता हूँ,डेविड लेटरमन जैसे जंक डी एन ए के टॉप 10 काम, ये नियन्त्रण करता है आर एन ए प्रोसेसिंग, एडिटिंग और स्प्लिसिंग पर/ जंक डी एन ए ये कोई जंक नही,ये ट्रांसलेशन क्रिया को बढ़ाता है, हमने पहले प्रोग्राम में उस एनीमेशन में यही देखा, ये एम्ब्रोयोलोजीकल बढ़ोतरी को बढ़ता है, डी एन ए रिपेअर करता है, औरसेल के अमीनो डिफेंस में भी मदत करता है, याने ये तो 10 कामों की छोटी लिस्ट है, जो जंक डी एन ए में खोजी गई, ये जंक नही और बुद्धिमत्ता की डिजाईन में पूरी बहस यही है, जोआधारित है, जंक डी एन ए पर कि ये काम नही करता ये सही नही है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, एक मिनट बाकी है, हम वो सवाल पूछना चाहते हैं जो बहुत से लोग कहते हैं, जानतेहैं कि किसी तरह से किसी जज ने कहा कि ये तो आस्था विज्ञान पर हावी होने की कोशिश करती है/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, फिर कहूँ कि हर कारण हैं कि हम सोचे कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन साइंटिफिक थेयरी है,ये साइंटिफिक कारण का स्थिर तरीका है,जो खुद डारविन ने खोजा था,दूसरी बात कि हम सरकारी जज को नही देखते, कि विज्ञान की फिलोसोफी के गहरे सवालों का जवाब दे/कि विज्ञान के स्वभाव और परिभाषा के बारे में बताए/ये तो विज्ञान के फिलोसोफर करते हैं, ये उनकी विशेषता है, मैं उन लोगों में से हूँ, अमिन विश्वास करता हूँ कि कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन में हर बात है कि विज्ञानकी निश्चित परिभाषा कर सके/ लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण है,ये दावा करना कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन कोई आस्था है, ये मुख्य बात उठती है और हमें ये देखना होगा, ये तो बुद्धिमत्ता की डिजाईन की बुनियाद और इसके उपयोग की बात है/मैं ये कहूँगा कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन में ऐसी कुछ बातें हैं जो धार्मिक विश्वास से मिलती है,क्योंकि बहुत से आस्थिक और श्रद्धा में, याने मानते हैं कि किसी तरह से कोई न कोई सृष्टिकर्ता या बनानेवाला है, बुद्धिमत्ता की डिजाईन इसे मानती है/

लेकिन ये जानना जरूरी है कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन आस्था पर आधारित नही है,ये बाइबल के वचन का अर्थ बताना नही है, ये धार्मिक अधिकार मेंरहना नही है/ये आधुनिक विज्ञान की खोज पर आधारित है, खासकर आधुनिक मॉलिक्यूल बायोलॉजी में, और ये साइंटिफिक कारणबनाने के तरीके पर आधारित है,जो ये थेयरी आने के बहुत पहले स्थापित की गई हैं, डारविन और ऐसे ही दूसरे महान वैज्ञानिकों के द्वारा/याने ये विज्ञान पर आधारित हैं, वैज्ञानिक कारणों पर आधारित है,लेकिन इसका शायद ज्यादाधार्मिक उपयोगहो सकता है,मुझे ये सही लगता है, लेकिन ये इस थेयरी को सही होने से हटा नही सकता/ हमें यदि थेयरी की बातें पसंद नही आती है तो उसके आधार हम उसे सही या गलत नही बना सकते हैं,मेरेलिए ये कहना पूरी तरह गलत है कि डारविन की बातें सही थी, क्योंकि वैज्ञानिक सोचते हैं कि ये नास्तिकवाद है, हम सबूतों के आधार पर थेयरी स्थापित करते हैं, जहाँ सबूत काफी होते हैं कि मुद्दे को बताए, औरमैं कहूँगा कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन तोमजबूत सबूतों पर आधारित है, इसलिए इसमें धार्मिक विचार हैं या नही इसका हमारी थेयरी से सम्बन्ध नही है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अगले हफ्ते हम देखना शुरू करेंगे, टेलिस्कोप द्वारा,और हम देखेंगे जहाँ वैज्ञानिकों ने पाया है, बिंग बैंग और संसार की फिने ट्यूनिंग के बारे में, आशा है कि आप अगले हफ्ते जुड़ जाएंगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्‌ द्यद ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ऋन्ड्क्ष्